राजस्थान में ग्रामीण पर्यटन का विकास एवं प्रबंधनः एक भौगोलिक अध्ययन

प्रेम सोनवाल

सारांश :

राजस्थान की भौगोलिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विविधता एवं परिपूर्णता इसे एक ऐसा गुलदस्ता बनाती है, जो कि हर प्रकार के फूलों से सुशोभित है। यहां पर रेत के धोरे, लोकगीत, लोकनृत्य, दुर्ग, हवेलियां, मंदिर, बाग, हस्तकला एवं प्राकृतिक परिवेश पर्यटकों को आकर्षित करता है। राजस्थान के गांव हमेशा से अपनी लोक–कलाओं, लोक–नृत्य और हस्तशिल्प के लिए विख्यात रहे है। यहां की समृद्ध ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत और प्रकृति के सान्निध्य में खुला वातावरण पर्यटकों को अपनी ओर खींचने के लिए पर्याप्त है। यही सब कारक राजस्थान में ग्रामीण पर्यटन को विपुल संभावनाओं वाला क्षेत्र बना देता है। ग्रामीण पर्यटन के अंतर्गत मुख्य जोर पर्यटन और इसके आर्थिक लाभ को गांव तक पहुंचाना है। कृषि के क्षेत्र में घटती आमदनी, रोजगार हेतु गांवों से लोगों का शहरों की ओर पलायन रोकना, स्थानीय इतिहास, संस्कृति, साहित्य को संरक्षित एवं सुरक्षित रखना ही ग्रामीण पर्यटन का प्रमुख आधार है। ग्रामीण पर्यटन के विकास से गांवों में रोजगार बढ़ेगा एवं लोक कलाकारों की प्रतिभा पूरे विश्व के सामने आयेगी। ग्रामीण पर्यटन के विकास के लिए सब से जरूरी ग्रामीणों के बीच जागरूकता बढ़ाना और देश–विदेश में ग्रामीण पर्यटन की कुशल विपणन रणनीति तैयार करना। इसके अलावा गांवों में अच्छी भौतिक अवसंरचना, बिजली व इंटरनेट की सुविधा, स्थानीय पर्यटन गाईड़ तैयार करना रणनीति का हिस्सा है। इसके लिए सरकार, एनजीओ, पंचायत, सामुदायिक संगठन, पीपीपी भागीदारी सभी को साथ मिलकर काम करना होगा। प्रस्तुत शोध–पत्र में राजस्थान में ग्रामीण पर्यटन के विकास, प्रबंधन एवं चुनौतियों का भौगोलिक विश्लेषण किया गया है।

संकेताक्षर :–विपणन रणनीति, ग्रामीण पर्यटन, सांस्कृतिक विरासत, स्थानीय पर्यटन गाईड

प्रस्तावना :

पर्यटन एक ऐसी यात्रा है जो मनोरंजन, आमोद–प्रमोद व फुरसत के क्षणों का आनंद उठाने के उद्देश्य से की जाती है। पर्यटन में व्यक्ति अपने ज्ञान , अनुभव , भावनाओं आदि का विकास करता है। पर्यटन में खेल–कूद, शैक्षणिक भ्रमण, धार्मिक दृष्टिकोण, राजनैतिक दृष्टिकोण आदि से की गई यात्रा भी शामिल है। सेवा उद्योग में रोजगार के अवसर पर्यटन से जुड़े है। इन सेवा उद्योगों में परिवहन सेवा, आतिथ्य सेवा, टूर एवं ट्रेवल सेवा, होटल एवं मनोरंजन सेवा के साथ–साथ कुटीर उद्योग से संबंधित सेवायें शामिल है। अतः राजस्थान में मार्च, 1989 में पर्यटन को उद्योग का दर्जा भी दिया गया है। वर्तमान में पूरे विश्व में पर्यटन उद्योग में बडा बदलाव हो रहा है। लोगों की क्रय शक्ति में बढ़ोतरी और परिवहन के तेज व सस्ते साधन उपलब्ध होने के कारण लोग अधिक संख्या में देश–विदेश की यात्राएं करने लगे है। कम आय वर्ग के लोग भी शहर की भाग–दौड़ भरी जिंदगी से दूर सुकून की तलाश में कम खर्चीली जगह पर घूमने जा रहे है। आज के विचारशील पर्यटक नई–नई संस्कृतियों, कृषि के तौर–तरीके जानने, स्थानीय खान–पान व परंपराओं का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करने ग्रामीण क्षेत्रों की ओर यात्रा करने निकलने लगे है।

भारत सरकार ने ग्रामीण पर्यटन की परिभाषा में स्पष्ट किया है कि 'कोई भी ऐसा पर्यटन जो ग्रामीण जीवन, कला, संस्कृति और ग्रामीण स्थलों की धरोहर को दर्शाता हो, जिससे स्थानीय समुदाय को आर्थिक व सामाजिक लाभ पहुंचता हो, साथ ही पर्यटकों व स्थानीय लोगों के बीच संवाद से पर्यटन अनुभव के अधिक समृद्ध बनने की संभावना हो, तो उसे 'ग्रामीण पर्यटन' कहा जा सकता है'। 2014 में भारत सरकार ने 'स्वदेश दर्शन' नामक योजना में 13 विषय आधारित सर्किटों में ग्रामीण सर्किट को भी महत्व दिया है। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की लगभग 68.84 प्रतिशत जनसंख्या भारत के लगभग 640867 गांवों में निवास करती है। राजस्थान की लगभग 75.13 प्रतिशत जनसंख्या राजस्थान के लगभग 44795 गांवों में निवास करती है। हर

एक गांव की अपनी विशेषता होती है। महात्मा गांधी ने कहा था कि भारत गांवों में बसता है। भारत का ग्राम्य जीवन असली भारत की तस्वीर प्रस्तुत करता है। हमारा गांव देश की संस्कृति व परंपराओं का खजाना है। ग्रामीण पर्यटन में पर्यटक गांव के जीवन को समझने और उसका प्रत्यक्ष आनंद लेने के उद्देश्य से गांवों में जाकर भ्रमण एवं निवास करते है। वहां के त्यौहार, उत्सव, रीति–रिवाजों, खान–पान, पहनावा आदि में सक्रिय होकर भागीदारी निभाते है। पर्यटक गांव की दिन–प्रतिदिन की गतिविधियों में भाग लेते हुए वहां के जीवन का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करते है। इससे ग्रामीणों को रोजगार मिलता है और प्राकृतिक व सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण के साथ लुप्त होती जा रही ग्रामीण कलाओं विधाओं की सुरक्षा भी की जा सकती है।

राजस्थान में ग्रामीण पर्यटक के प्रमुख प्रकार :–

1 कृषि पर्यटन :– इसमें पर्यटक किसानों द्वारा फसल उगाने से पैकिंग तक की प्रक्रिया को खेतों में रूककर नजदीक से महसूस करता है। कृषि फार्म में रूक कर खेतों से सीधे खाने की मेज तक (फार्म टू डायनिंग टेबिल) परोसी गई वस्तुओं का लुत्फ उठाता है।

2 संस्कृति पर्यटन :– पर्यटकों को स्थानीय संस्कृति, त्यौहार, वेश–शुषा, बोली–भाषा, लोक गीत एवं लोक नृत्यों में हिस्सा लेने का अवसर प्रदान करना संस्कृति पर्यटन के अंतर्गत आता है।

3 प्रकृति पर्यटन :– शहरों की भीड़ भरी जिंदगी से कुछ दिनों के लिए निजाद पाने और एकांत की तलाश में लोगों को गांवों की शांत व प्राकृतिक पर्यावरण वाले स्थान आकर्षित करते है। पर्यटक स्वास्थ्य लाभ की दृष्टि से भी गांव में आते है।

4 साहसिक पर्यटक :– पर्यटक जिंदगी में रोमांच का अनुभव प्राप्त करने के लिए गांवों में आते है। इसमें पहाडों पर चढ़ना, जिप लाईन, ट्रेकिंग, पेराग्लाइडिंग, ट्री हाउस, गर्म हवा का गुब्बारा आदि शामिल है।

5 नृजातीय पर्यटन :– इसका उद्देश्य विभिन्न संस्कृतियों की जीवन शैलियों और रीति–रिवाज एवं विश्वासों के बारे में जानकारी प्राप्त करना है।

6 आर्थिक पर्यटन :– इसमें पर्यटक प्रसिद्ध स्थानीय कलाकारों द्वारा निर्मित हस्तकला, चित्रकारी और स्थापत्य कला से जुडी हुई वस्तुओं को खरीदने गांव की ओर आते है।

7 समुदाय आधारित इको पर्यटन :– इसमें पर्यटन और प्रकृति, पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण का प्रबंधन इस ढ़ंग से किया जाता है कि एक तरफ पर्यटन और पारिस्थितिकीय आवश्यकता पूरी हो और दूसरी तरफ स्थानीय समुदायों या जनजातीयों के प्राकृतिक संसाधनों, सांस्कृतिक–सामाजिक धरोहरों एवं परंपरागत मूल्यों एवं जीवन शैलियों का संरक्षण किया जा सके।

8 धार्मिक पर्यटन :– प्रसिद्ध स्थानीय देवी–देवताओं में अपनी धार्मिक आस्थाओं के कारण पर्यटक गांवों की ओर आते है।

राजस्थान में ग्रामीण पर्यटक की संभावनायें

पर्यटन की दृष्टि से राजस्थान पूरे विश्व के पर्यटन मानचित्र पर अपना विशिष्ट स्थान रखता है। यहां देशी–विदेशी पर्यटकों हेतु अनेक आकर्षक के केन्द्र है। राज्य में किले, महल व हवेलियां, मेले व त्यौहार, ऐतिहासिक अतीत एवं शौर्य, पराक्रम व वीरता की गाथायें, हस्तकलाएं, लोक–संस्कृति, हेरिटेज होटल, धार्मिक पर्यटन, लोक–गीत एवं स्थापत्य कला व नृत्य पर्यटकों को आकर्षित करते है। जिससे निश्चित रूप से रोजगार एवं राजस्व में प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से वृद्धि होती है। राजस्थान के गांवों की प्रत्यक्ष जीवन शैली, लोक–नृत्य, संगीत, परंपरागत खाना व हस्तशिल्प को प्रत्यक्ष रूप से महसूस करना ग्रामीण पर्यटन का प्रमुख भाग है। भारत सरकार ने ग्रामीण पर्यटन को बढावा देने हेतु 30 जून ,2011 को 52 गांवों की सूची जारी कि जिसमें राजस्थान का एक गांव सामोद शामिल है। इसके अलावा राज्य में ग्रामीण पर्यटन की संभावना वाले प्रमुख गांव निम्न प्रकार से है :–

1. मण्ड़ावा गांव :– शेखावटी क्षेत्र के केन्द्र में स्थित मण्ड़ावा गांव मण्ड़ावा हवेली, चौकानी हवेली, सराफ हवेली में चित्रकारी व नक्काशी का बेहतरीन काम है।

2. विश्नोई गांव :– जोधपुर के समीप स्थित विश्नोई गांव ग्रामीण राजस्थान का बेहतरीन अनुभव पर्यटकों को देता है। यहां आने वाले पर्यटकों को राजस्थान का विख्यात आतिथ्य व घर में बना हुआ शानदार भोजन मिलता है। लोक–नृत्य से उनका स्वागत होता है। यहां पर पर्यटकों को बेखौफ घूमते हुए चिंकारा एवं अन्य वन्य जीव मिल जायेंगें। यहां पर पर्यटकों को अपने हाथों से गाय का दूध निकालना एवं मिट्टी के बर्तन बनाने का अनुभव मिलता है।

3. खुरी गांव :– जैसलमेर के पास स्थित खुरी गांव में पर्यटक ऊंट की सफारी एवं रात–भर रेत के टीलों में कैम्प लगाकर लोक–नृत्यों का आनंद ले सकते है।

4. सामोद गांव :– जयपुर के नजदीक स्थित यह गांव किले व हवेली के लिए प्रसिद्ध है। यहां का लाख का कार्य, कागज की चित्रकारी व ऊंट की सफारी प्रसिद्ध है।

5. बिजयपुर गांव :– चित्तौड़गढ़ के पास स्थित बिजयपुर का किला गांव के बीचों–बीच है जिसे हेरिटेज होटल में बदल दिया गया है। यहां पर बर्ड वाचिंग, घोड़े की सफारी, वन्य जीव सफारी प्रसिद्ध है।

6. खींमसर गांव :– जोधपुर के समीप स्थित यह गांव एक परम्परागत व ऐतिहासिक गांव है। खींमसर किले के अंदर मनमोहक चित्रकारी है। शांत रेगिस्तान के धोरों में सुकुन भरे पलों को संजोने का बेहतरीन गांव है।

7. कुचामन गांव :– नागौर जिले में स्थित कुचामन गांव अपनी हवेलियों, महल, लोक देव मंदिर, ऊंट की सफारी व बर्ड वाचिंग के लिए प्रसिद्ध है।

8. किच्चन गांव :– जोधपुर जिले में स्थित किच्चन गांव सर्दियों में साईबेरिया क्षेत्र से आये कुरंजा पक्षियों का घर है। यह गांव पर्यटकों को राजस्थानी गांव के जीवन शैली की झलक देता है।

उपर्युक्त ग्रामीण क्षेत्रों के अलावा शेखावटी ग्रामीण क्षेत्रों में हर्षनाथ का मंदिर, जीण माता मंदिर, हनुमान मंदिर के दर्शन के अलावा ग्रामीणों के द्वारा बनाई गई पोमचा, चुनरी व चूड़ियां खरीद सकते है। यहां का ग्रामीण भोजन बाजरे की रोटी, सरसों का साग, लस्सी, पापड़ एवं सागरी व केर प्रसिद्ध है। हाड़ौती के ग्रामीण क्षेत्रों में बीसलपुर बांध, शिवाड मंदिर, चौथमाता का मंदिर एवं वाल्मिकी मंदिर प्रसिद्ध है। जनजातीय ग्रामीण क्षेत्रों में माही बांध, मण्डरेश्वर मंदिर, देव सोमनाथ मंदिर, ऋषभदेव मंदिर, बेणेश्वर मेला इत्यादि जनजातीय संस्कृति, रीति–रिवाज व धार्मिक आस्था का अनुभव प्रदान करते है। इन जनजातीय क्षेत्रों के गांवों में साहसिक एवं इको पर्यटन की पर्याप्त संभावना है।

आभानेरी के ग्रामीण क्षेत्रों में भाण्डारेज गांव की बावड़ी, आलूदा गांव की बावड़ी व आभानेरी गांव की चांद बावड़ी मुगल व राजपूत स्थापत्य कला का बेजोड़ नमूना है। इनके अलावा कनाई गांव (जैसलमेर) में रेत के धोरों की बेजोड़ तस्वीर, अलसीसर गांव (झुंझुनू) हवेलियों, स्थापत्य कला व चित्रकारी के लिए प्रसिद्ध है। लोटवाड़ा गांव (दौसा) जिसे मोर का घर भी कहते है, पर्यटक गांव के चारों ओर ट्रेकिंग भी कर सकते है। भूरी पहाड़ी गांव (सवाई माधोपुर) जहां मीणा जन–जाति की ग्रामीण जीवन शैली का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त कर सकते है। नीमराणा गांव (अलवर) यहां का नीमराणा किला, कठपुतली शो, लोक–नृत्य व परंपरागत राजस्थानी खाना प्रसिद्ध है।

राजस्थान के ग्रामीण पर्यटन की चुनौतियां :–

ग्रामीण पर्यटन के विकास में कई चुनौतियां भी है। पर्यटकों व स्वयं ग्रामीणों में इसके बारे में जागरूकता की कमी है। किसी भी गांव में अच्छा दर्शनीय स्थल होने के बावजूद भी ग्रामीणों को इसका आभास नही होता। अतः ग्रामीणों के बीच जागरूकता बढाना और देश–विदेश में ग्रामीण पर्यटन की कुशल विपणन रणनीतियां बनाना आवश्यक है। साथ ही हमें अपने गांवों का आधारभूत ढ़ांचा भी विकसित करना होगा ताकि जब पर्यटक जब राजस्थान के गांव में जाये तो उनके लिए पक्की सड़कें हो, ठहरने का साफ–सुंदर स्थान हो, स्थानीय ट्यूरिस्ट गाईड हो, बिजली व तीव्र इंटरनेट की सुविधा हो एवं पर्यटकों की दैनिक वस्तुओं की जरूरत को पूर्ण करने की दूकानें हो। इसके अलावा ग्रामीण युवकों को आचार–व्यवहार के बारे में प्रशिक्षित करना होगा ताकि वे पर्यटकों से प्रभावित संवाद कर सकें। अपने आतिथ्य के लिए मशहूर ग्रामीणों को यह प्रशिक्षण देना होगा कि वे कैसे पर्यटक द्वारा उनके गांव में बिताये गये पलों को यादगार बना सके।

ग्रामीण पर्यटन की विपणन रणनीतियां :–

राज्य के पर्यटक स्थलों की जानकारी उपलब्ध कराने एवं पर्यटकों को राज्य में आगमन हेतु आकर्षित करने के लिए राज्य के पर्यटन विभाग ने निम्नलिखित माध्यमों से पर्यटन प्रचार–प्रसार व प्रभावी विपणन संबंधी कार्य किये जा रहे है :–

1. पर्यटन प्रचार साहित्य का मुद्रण ।
2. प्रिंट व इलेक्ट्रोनिक माध्यमों से विज्ञापन ।
3. राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार, कान्फ्रेंन्स व मार्ट का आयोजन।
4. फिल्म, फोटो, श्रव्य–दृश्य सामग्री, इंटरनेट आदि।
5. देश व विदेश के प्रतिष्ठित पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से विज्ञापन।
6. मेले–त्यौहारों एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन।
7. देश–विदेश के ख्यातनाम प्राप्त लेखकों, छायाकारों, पत्रकारों एवं पर्यटन व्यवसाय से संबंधित प्रमुख लोगों का विभागीय अतिथि–सत्कार एवं परिचयात्मक भ्रमण करवाना।
8. पर्यटन विभाग द्वारा पर्यटकों की सुविधा एवं अधिक विस्तृत जानकारी उपलब्ध कराने हेतु एक नया वेब पोर्टल www.tourism.rajasthan.gov.in विकसित किया गया है।
9. विभाग द्वारा सोशल मीड़िया प्लेटफार्म पर फेसबुक, टिवट्र, यू–ट्यूब व इस्टाग्राम द्वारा निरंतर राजस्थान पर्यटन का प्रचार–प्रसार किया जा रहा है।

जाने क्या दिख जायें (jaane'kya dikh jaaye) :–

राजस्थान में पर्यटन को तीव्र गति देने के लिए कुशल विपणन रणनीति के तहत् जाने क्या दिख जाये कैम्पेन चला रखी है। जिसमें पर्यटन विभाग की वेब साईट पर नया लोगो लगाया गया है। जिसे देखने से लगता है कि दो ऊंट है व दो चिड़ियां उड़ रही है पर ध्यान से देखो तो राजस्थानी व्यक्ति की मूंछें व आंखें नजर आ रही है। और जो लिखा है, वह भी एकदम सही है। जाने क्या दिख जायें। इस कैम्पेन में आर्यास्थान (Aryasthan), मीरास्थान (Meerasthan), हूनस्थान (Hanusthan) , बिनोएस्थान (Binoysthan) एवं जेनेस्थान (Janesthan) वीड़ियो विज्ञापन आक्रामक विपणन रणनीति का हिस्सा है।

RAJASTHAN

JAANE KYA DIKH JAAYE!

Come, Visit Rajasthan "Jaane kya dikh jaye" – Rajasthan Tourism

चित्र :–राजस्थान पर्यटन विभाग का नया लोगो

राजस्थान राज्य में ग्रामीण पर्यटन के लिए स्वोट (SWOT) विश्लेषण :–

Strength (शक्तियां)	Weakness (कमजोरियां)
– समृद्ध ऐतिहासिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विरासत – प्रसिद्ध लोक कला, लोक गीत, लोक नृत्य, लोक वाद्य यंत्र – दुर्ग, बावडियों, हवेलियों की प्रसिद्ध स्थापत्य कला व भित्ति चित्र – प्रसिद्ध रेत के धोरे, मेले, मंदिर, त्यौहार – ग्रामीण खुला वातावरण व आकर्षक प्राकृतिक परिवेश – प्रसिद्ध चित्रकारी, फिल्म शूटिंग व वेडिंग डेस्टिनेशन एवं संगीत	– ग्रामीणों व पर्यटकों में जागरूकता की कमी – भौतिक अवसंरचना की कमी – स्थानीय ट्यूरिस्ट गाइडों की कमी – ग्रामीण स्वच्छता का अभाव – पर्यटकों की सुरक्षा एवं त्वरित कार्यवाही का अभाव – पर्याप्त पेइंग गेस्ट व होम स्टे की कमी
Opportunities (अवसर)	Threats (खतरे)
– रोजगार के अवसर बढना – शहरों की ओर पलायन को रोकना – लुप्त होती ग्रामीण कला, संस्कृति, रीति–रिवाज का संरक्षण – जीर्ण–क्षीर्ण होते प्राचीन दुर्ग, मंदिर व हवेलियों का संरक्षण – ग्रामीणों का आर्थिक जीवन स्तर बढना – पारिस्थितिकीय–पर्यावरण में संतुलन एवं जैव– विविधता का संरक्षण	– गांवों में कंकरीट बढना जिससे प्राकृतिक सौन्दर्य कम होना – पर्यावरण संबंधी समस्याओं का उत्पन्न होना – गांवों में आर्थिक विषमता का बढना – पाश्चात्य संस्कृति के प्रवेश का खतरा – गुजरात, मध्य प्रदेश एवं उत्तर प्रदेश से पर्यटन प्रतिस्पर्धा – यदि पर्यटक को बुरा अनुभव हुआ तो भविष्य में कई पर्यटकों को खो देना

निष्कर्ष :–

राजस्थान के गांव हमेशा से अपनी लोक कलाओं, लोक नृत्य, लोक गीत, मेले, त्यौहार, किले, बावडियों, हवेलियों एवं रेत के धोरों के साथ हस्तशिल्प, चित्रकारी एवं स्थापत्य कला के लिए विख्यात रहे है। यहां की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, प्रकृति के सान्निध्य में खुला वातावरण पर्यटकों को अपनी ओर खींचने के लिए पर्याप्त है। यही सब कारक राजस्थान में ग्रामीण पर्यटन को विपुल संभावनाओं वाला क्षेत्र बना देते है। ग्रामीण पर्यटन से जहां एक तरफ यह ग्रामीण युवकों के लिए रोजगार का माध्यम बनेगा, वहीं दूसरी ओर विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं और जीवन शैली के लोगों को एक–दूसरे के करीब लाकर हमारी राष्ट्रीय एकता को भी मजबूत करेगा।

गांव को एक सुरक्षित और आनंदमयी पर्यटन स्थल में परिवर्तित करने के लिए वहां के स्थानीय समुदायों की भागीदारी एवं सरकार, एनजीओ, पंचायत, सामुदायिक संगठन व पीपीपी भागीदारी सभी को साथ मिलकार काम करना होगा। गांव में स्वयं सहायता समूहों के जरिये भी स्थानीय कलाओं का विकास किया जा सकता है। इस प्रकार से हम कह सकते है कि राजस्थान में ग्रामीण पर्यटन की असीम संभावनायें है। बस हमें एकजुट होकर कार्य करना होगा।

व्याख्याता, भूगोल विभाग
शहीद कैप्टन रिपुदमन सिंह राजकीय महाविद्यालय सवाई माधोपुर

संदर्भ गन्थ :–

1. शर्मा, एच.एस. एवं शर्मा एम.एल. (2017) ,राजस्थान का भूगोल, पंचशील प्रकाशन जयपुर।
2. व्यास, राजेश कुमार (2004), राजस्थान में पर्यटन प्रबंध, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर।
3. बंसल, सुरेशचंद्र (2011), पर्यटन भूगोल एवं यात्रा प्रबंधन, साहित्य सागर प्रकाशन, चौड़ा रास्ता ,जयपुर।
4. प्रगति प्रतिवेदन (2015–2016), पर्यटन विभाग, राजस्थान सरकार।
5. आर्थिक समीक्षा (2016–2017), आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, राजस्थान, जयपुर।
6. वर्मा ,रश्मि(2017), भारत में ग्रामीण पर्यटन में संभावनाएं ,कुरूक्षेत्र, वर्ष 64 अंक 2,दिसम्बर, पृ.सं.5,6
7. राय, मधुरा (2017), ग्रामीण पर्यटनः विकास और विस्तार की ओर,कुरूक्षेत्र, वर्ष 64 अंक 2,दिसम्बर, पृ.सं.8,9

8. सिंह, सुरेंद्र प्रसाद (2017), कृषि पर्यटन : गांव में पर्यटन का नया आकर्षण,कुरूक्षेत्र, वर्ष 64 अंक 2,दिसम्बर, पृ.सं.36
9. Ahmad, R (2013), Tourism and Rural Management, Regal Publication, New Delhi.
10. Hosetti, B.B. (2000), Ecotourism Development and Management, Pointer Publishers, Jaipur
11. Khan, M.Y. (2015), TourismGeography, Wisdom Press, New Delhi.
12. Khatib, K.A. (1997), Geography of Tourism, Mehta Publishing House, Pune.
13. Rajasthan Tourism Unit Policy 2015, Department of Tourism, Government of Rajasthan.
14. Revathi, R (2015), Potentials and Prospects of Rural Tourism in Thanjavur District, PhD Thesis, Madurai Kamaraj University, Madurai, 33-34.
15. Sampson, C (2012), Rural Tourism, Discovery publishing House Pvt Ltd, New Delhi
16. Sharma, K.C. (1996),"Tourism policy, planning, strategy". Pointer Publishers, Jaipur.
17. www.tourism.rajasthan.gov.in
18. www.rajasthanonline.in
19. www.thrillophilia.com
20. www.tourism.gov.in